भारत–नेपाल सम्बन्ध एवं वर्तमान स्थिति

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

नेपाल भारतीय उपमहाद्वीप का ही एक भाग है तथा यह स्थलों से घिरा हुआ देश है। भारत की लगभग 1860 किमी0 सीमा नेपाल से सटी है। यह भारत एवं चीन के बीच स्थित है। हिमालय की गोद में बसे नेपाल की उत्तरी सीमा तिब्बत से मिलती है तथा इसकी पूर्वी, पश्चिमी और दक्षिणी सीमायें भारत से मिलती हैं। नेपाल दोनों तरफ विशाल देशों से भूबद्ध (Landlock) है। इसका क्षेत्रफल 1,48,000 किमी2 के लगभग है। इसकी जनसंख्या 3 करोड़ के लगभग है।

सन् 1768 में पृथ्वी नारायण शाह ने काठमाण्डू पर फतह कर एकीकृत साम्राज्य की नींव डाली। सन् 1846 में नेपाल पर राजाओं का वर्चस्व हो गया, जिन्होंने सम्राट को शक्तिहीन कर नेपाल को विश्वसे काट दिया। बाद में राजा और राणाओं के बीच एक समझौता हुआ जिसमें यह तय हुआ कि राजा को 'पांच सरकार' तथा राणा को 'तीन सरकार' कहा गया।

भारत–नेपाल संबंधों की पृष्ठभूमि

- नेपाल भारत का एक महत्वपूर्ण पड़ोसी है और सदियों से चले आ रहे भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं आर्थिक संबंधों के कारण वह हमारी विदेश नीति में भी विशेष महत्व रखता है।
- भारत और नेपाल हिंदू धर्म एवं बौद्ध धर्म के संदर्भ में समान संबंध साझा करते हैं, उल्लेखनीय है कि बुद्ध का जन्म स्थान लुंबिनी नेपाल में है और उसका निर्माण स्थान कुशीनगर भारत में स्थित है।
- वर्ष 1950 की भारत नेपाल शांति और मित्रता संधि दोनों देशों के बीच मौजूद विशेष संबंधों का आधार है।

1950 के उपरान्त की स्थिति

सन् 1951 में राजा, नेपाली कांग्रेस के बीच समझौता हुआ तथा प्रथम बार संसद हेतु चुनाव हुए तथा नेपाली कांग्रेस के वी0पी0 कोइराला के नेतृत्व में सरकार का गठन किया गया। नेपाल में लोकतंत्र की स्थापना के लिए संघर्षरत नेपाली कांग्रेस के प्रायः वरिष्ठ नेताओं की शिक्षा–दीक्षा भारत में हुई। इन नेताओं ने अपने देश में निरंकुश राजाशाही का अन्त कराया। 30 जुलाई 1950 को भारत में नेपाल के मध्य ''भारत–नेपाल शान्ति व सहयोग'' की एक सन्धि की। न तो 1947 से पूर्व और न ही इसके बाद बिट्रेन अथवा भारत ने नेपाल के आन्तरिक मामलों में कभी भी हस्तक्षेप किया। भारत के प्रयास से नेपाल संयुक्त राष्ट्र संघ का सदस्य बना। 1956 में भारत के राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसादने नेपाल की यात्रा की।

1960 में नेपाल ने चीन के साथ ''मित्रता एवं सहयोग'' की सन्धि कर ली। फलतः 1961 में भारत एवं नेपाल के सम्बन्धों में कुछ दरार देखी गयी। 1962 में भारत–चीन युद्ध के समय नेपाल के साथ भारत के सम्बन्ध बहुत अच्छे नहीं थे। लाल बहादुर शास्त्री ने भारत–नेपाल सम्बन्धों में सुधार लाने का प्रयास किया। तथा 1965 में नेपाल नरेश ने भी भारत की यात्रा की इससे दोनों देश के बीच भ्रान्तियाँ दूर हुयी। श्रीमती इन्दिरा गाँधी के युग में दोनो देशों के मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों को और मजबूत किया जा सका तथा नेपाल यह अनुभव करने लगा कि भारत की कोई साम्राज्यवादी आकांक्षाए नहीं है। उसे भारत की प्रभुसत्ता का आदर करना ही चाहिए। 13 अगस्त, 1971 को दोनों देशों के बीच एक पंचवर्षीय समझौता किया गया जिसके तहत भारत ने नेपाल के कच्चे माल के व्यापार की खुली छूट दे दी एवं उसे मार्ग सुविधायें भी प्रदान कर दी।

नेपाल ने बांग्लादेश के अस्तित्व में आने पर उसे तत्काल मान्यता प्रदान कर दी परन्तु 1975 में सिक्किम के विलय के समय नेपाल नरेश वीरेन्द्र ने इसे विस्तारवादी कह डाला। उस समय इंदिरा गॉधी ने यह स्पष्ट कर दिया कि नेपाल को यह मानकर नहीं चलना चाहिए कि भारत की मैत्री सदैव बरकरार रहेगी तथा यह मैत्री एक तरफ से नहीं चल सकती। सन् 1977 में जनता पार्टी के सत्तारूढ़ होने पर दोनों के बीच आपसी सम्बन्धों को और अधिक मैत्रीपूर्ण

बनाने का प्रयास किया गया, परन्तु कोईराला की गिरफ्तारी एवं उन्हें मृत्युदण्ड दिये जाने की घोषणा ने दोनों देशों के सम्बन्धों में दरार पैदा कर दी। सन् 1980 में इंदिरा गाँधी की सरकार के पुनः सत्तारूढ़ होने पर भारत–नेपाल सम्बन्धों में सुधार एवं सहयोग देखा गया। सन् 1987 में दोनों देशों के बीच 'व्यापार एवं पारगमन' की सन्धि की गई, जिसका नवीनीकरण राजीव गाँधी सरकार ने नहीं किया। नेपाल में लम्बे आंदोलन के बाद सन् 1990 में सम्राट वीरेन्द्र ने लोकतंत्र बहाल कर दिया। सन् 1991 के चुनाव में नेपाली काँग्रेस को बहुमत मिला। इसके बाद कई सरकारें बनी ं तथा बर्खास्त हुई।

भारत ने नेपाल की पंचवर्षीय योजनाओं में भरपूर सहायता दी है तथा उसकी आर्थिक दशा को सुधारने हेतु भी उदारता से ऋण दिया है। भारत नेपाल को कोलकाता बंदरगाह को उपयोग में लाने हेतु अनुमति प्रदान की गई। कोसी तथा त्रिशूली परियोजनाओं में भारत ने उदारता से अपार धनराशि खर्च की भारत ने अनेक सड़कों का निर्माण किया। भारत ने नेपाल को 300 करोड़ रूपये से भी अधिक की सहायता दी तथा उसने नेपाल की बड़ी–बड़ी नदियों पर बांध बनाकर सिंचाई एवं बिजली पैदा करने वाली अनेक परियोजनाओं को पूरा करके उसे तथा स्वयं को लाभांवित किया है।

नेपाल जलीय संसाधनों में एक धनी देश है। यदि दोनों देश इस क्षेत्र में निकटतम सहयोग करें तो इससे न केवल नेपाल का कायापलट हो सकता है अपितु भारत की अतृप्ति ऊर्जा अर्थव्यवस्था को भी सम्बल प्राप्त हो सकता है। दोनों देश आज तक सिंचाई, विद्युत, बाढ़ नियंत्रण तथा इसी प्रकार के आपसी लाभप्रद आर्थिक परियोजनाओं से वंचित रहे हैं। नेपाल में कृषि उत्पादन, सीमेंट और ऊर्जा के उत्पादन पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

भारत–नेपाल विवाद

भारत–नेपाल विवाद मुख्य रूप से व्यापार और पारगमन सन्धियों को लेकर प्रारम्भ हुआ। यह सही है कि दोनों देशों के बीच अक्टूबर, 1988 में व्यापार सन्धि पर प्रारम्भिक हस्ताक्षर हो गये थे। भारत को यह आशा थी कि भारतीय सामानों पर नेपाल द्वारा लगाया गया भारी सीमा शुल्क स्वतः समाप्त हो जायेगा। परन्तु ऐसा नहीं किया जा सका। दूसरी ओर

नेपाल ने सड़क से आने वाले चीन के माल पर साठ प्रतिशत की छूट दे दी। अतः प्राथमिकता का वादा करके भारत के साथ वादा खिलाफी कीगई। इसके अतिरिक्त भारत व्यापार और पारगमन दोनों के लिए संधि चाहता है जबकि नेपाल अलग–अलग संधि चाहता है। नेपाल ने अप्रैल, 1987 में आंशिक तौर से तथा सितम्बर, 1988 से पूरे देश में भारतीय मूल के लोगों के लिए रोजगार परमिट अनिवार्य कर दिया जबकि भारत ने 1950 की सन्धि का अनुपालन करते हुएऐसा कोई प्रतिबन्ध नहीं लगाया। भारत में लगभग 35 लाख नेपाली रहते हैं। तथा नेपाल में 50,000 भारतीय रहते हैं। सन् 1950 की सन्धि के ही कारण अन्य विदेशी नागरिकों की भाँति उनका पंजीकरण नहीं किया गया है। यह सर्वविदित है कि भारत–नेपाल व्यापार का सबसे भयावह पहलू रहा है तस्करी (Smuggling) । भारत द्वारा दी गई तमाम् सुविधाओं के बदले नेपाल ने भारत को और भारतीयों को तस्करी ही दिया। तस्करी नेपाल के सहयोग से फलफूल रही, जिसके कारण भारत को सर्वाधिक हानि हुई। अतः भारत को नेपाल के मामले में फूँक–फूँक कर कदम उठाना होगा। नेपाल के प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा ने फरवरी, 1996 में भारत की यात्रा की। उनकी राय में भारत की जनता और नेपाल की जनता के बीच बहुत अच्छे सम्बन्ध है और ये निरन्तर अच्छे हो रहे हैं। उनकी इसी यात्रा के दौरान भारत और नेपाल के बीच महाकाली नदी के पानी और उस पर स्थापित पन बिजली परियोजना से तैयार बिजली के बंटवारे पर एक ऐतिहासिक समझौते पर हस्ताक्षर भी हुए। इसके तहत 2,000 मेगावाट क्षमता की विशाल बिजली परियोजना पूरा करने का समझौता हुआ। इसके अनुसार नेपाल को लगभग 5 किलोवाट बिजली और 150 क्यूसेक पानी निःशुल्क प्रदान करेगा।

वर्तमान स्थिति

हाल ही में भारत के लिए स्थिति उस समय सहज हो गई जब कैलाश मानसरोवर यात्रा के लिए भारत द्वारा लिपुलेख–धाराचुला मार्ग के उद्घाटन करने के बाद नेपाल ने इसे एक तरफा गतिविधि बताते हुए आपत्ति जताई। नेपाल के विदेश मंत्रालय ने यह दावा किया कि महाकाली नदी के पूर्व का क्षेत्र नेपाल की सीमा में आता है। विदित है कि नेपाल ने

आधिकारिक रूप से नवीन मानचित्र जारी किया गया, जो उत्तराखंड के कालापानी, लिपियांधुरा और लिपुलेख को अपने संप्रभु क्षेत्र का हिस्सा मानता है। निश्चित रूप से नेपाल किस प्रकार की प्रतिक्रिया ने भारत को अचंभित कर दिया है। इतना ही नहीं नेपाल के प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली ने नेपाल में कोरोना वायरस के प्रसार में भारत को दोष देकर दोनों देश के बीच संबंधों को तनावपूर्ण कर दिया।

वस्तुतः इसे चीनी जादू कहा जाए या नेपाल की कूटनीतिक चाल कि पिछले कुछ वर्षों से लगातार भारत को परेशान करने की कोशिश हो रही है। भारत इन सभी कोशिशों को नेपाल की चीन से बढ़ती नजदीकी के रूप में देख रहा है। ऐसे में बड़ा सवाल है कि क्या भारत और नेपाल के बीच सदियों पुराने रिश्ते पर चीनी चाल भारी पड़ रही है? या फिर यह मान लिया जाए कि हालिया दिनों में नेपाल ज्यादा से ज्यादा महत्वाकांक्षी बन गया है और भारत उसकी आकांक्षाओं पर खरा नहीं उतर रहा है।

भारत नेपाल शांति और मित्रता संधि

- यह भारत और नेपाल के मध्य विपक्षी संधि है जिसका उद्देश्य दोनों दक्षिण एशियाई पड़ोसी देशों के बीच घनिष्ठ रणनीतिक संबंध स्थापित करना है।
- यह संधि दोनों देशों के बीच लोगों और वस्तुओं की मुक्त आवाजाही और रक्षा एवं विदेश मामलों के बीच घनिष्ठ संबंध तथा सहयोग की अनुमति देता है साथ ही यह संधि नेपाल को भारत से हथियार खरीदने की सुविधा भी देता ळें
- इस संधि के द्वारा नेपाल को एक भू–आबद्ध (Land-lock) देश होने के कारण कई विशेषाधिकार को प्राप्त करने में सक्षम बनाया ळें
- भारत नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के संबंधों की विशिष्टता है जिससे दोनों देशों के लोगों को आवागमन में सुगमता रहती है दोनों देशों के बीच 18 सो 50 किलोमीटर से अधिक लंबी साझा सीमा है जिससे भारत के 5 राज्य सिक्किम, पश्चिम बंगाल, बिहार उत्तर प्रदेश व उत्तराखंड जुड़े हुए हैं।

- भारत और नेपाल के बीच सीमा को लेकर कोई बड़ा विवाद नहीं है लगभग 98% सीमा की पहचान बहुत के नक्शे पर सहमति बन चुकी है, कुछ क्षेत्रों को लेकर विवाद है जिसे बातचीत के माध्यम से सुलझा ने की प्रक्रिया चल रही है।

सहयोग के विभिन्न क्षेत्र

सांस्कृतिक व धार्मिक क्षेत्र

नेपाल और भारत दुनिया के दो प्रमुख धर्म हिंदू और बौद्ध धर्म के विकास के आसपास एक सांस्कृतिक इतिहास साझा करते हैं। बुद्ध का जन्म वर्तमान नेपाल में स्थित लुंबिनी में हुआ था बाद में बुद्ध ज्ञान की खोज में वर्तमान भारतीय क्षेत्र बोध गया आए, जहां उन्हें आत्म ज्ञान प्राप्त हुआ। बोधगया से महात्मा बुध और उनके अनुयायियों ने विश्व के कोने–कोने तक बौद्ध धर्म का प्रसार किया। भारत व नेपाल दोनों ही देशों में हिंदू वह बौद्ध धर्म को मानने वाले लोग हैं। रामायण सर्किट की योजना दोनों देशों के मजबूत सांस्कृतिक व धार्मिक संबंधों का प्रतीक है।

सामाजिक क्षेत्र

भारत नेपाल की खुली सीमा दोनों देशों के संबंधों की विशेषता है, जिससे दोनों देशों के लोगों को आवागमन में सुगमता रहती है। दोनों देशों के नागरिकों के बीच आजीविका के साथ–साथ विवाह और पारिवारिक संबंधों की मजबूत नींव है। इस नींव. को ही रोटी बेटी का रिश्ता नाम दिया गया है।

आर्थिक क्षेत्र

भारत नेपाल का सबसे बड़ा व्यापार भागीदार होने के साथ–साथ विदेशी निवेश का सबसे बड़ा स्रोत है। भारत नेपाल को अन्य देशों के साथ व्यापार करने के लिए पारगमन सुविधा भी प्रदान करता है। नेपाल अपने समुद्री व्यापार के लिए कोलकाता बंदरगाह का उपयोग करता है। भारतीय कंपनियां नेपाल में विभिन्न आर्थिक गतिविधियों में संलग्न है। इन कंपनियों की नेपाल में विनिर्माण बिजली पर्यटन और सेवा क्षेत्र में उपस्थिति है।

अवसंरचना विकास क्षेत्र

भारत सरकार नेपाल में जमीनी स्तर पर बुनियादी ढांचे के निर्माण पर ध्यान केंद्रित करते हुए समय–समय पर विकास सहायता प्रदान करती है। इसमें बुनियादी ढांचे में स्वास्थ्य जल संसाधन शिक्षा ग्रामीण और समुदाय विकास जैसे मुद्दे शामिल हैं।

आपदा प्रबंधन

नेपाल में अक्सर भूकंप भूस्खलन और हिमस्खलन बादल फटने और बाढ़ जैसी प्राकृतिक आपदाओं का खतरा रहता है ऐसा मुख्य रूप से भौगोलिक कारकों के कारण होता है क्योंकि नेपाल एक प्राकृतिक रूप से संवेदनशील क्षेत्र में स्थित है। भारत आपदा से संबंधित ऐसे किसी भी मामले में कर्मियों की सहायता के साथ–साथ तकनीकी और मानवीय सहायता भी प्रदान करता है।

संचार क्षेत्र

नेपाल एक भू–आबद्ध देश है। जो तीन तरफ से भारत से और एक तरफ तिब्बत से घिरा हुआ है। भारत–नेपाल ने अपने नागरिकों के मध्य संपर्क बढ़ाने और आर्थिक वृद्धि एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कनेक्टिविटी कार्यक्रम शुरू किए हैं। हाल ही में भारत के रक्सौल को काठमांडू से जोड़ने के लिए इलेक्ट्रिक रेल ट्रैक बिछाने हेतु दोनों सरकारों के बीच समझौते पर हस्ताक्षर किए गए थे।

वर्तमान विवाद के बिंदु–

भारत व नेपाल के मध्य हालिया विवाद का कारण उत्तराखंड के धारचूला को लिपुलेख दर्रा से जोड़ती एक सड़क है। नेपाल का दावा है कि कालापानी (Kalapani) के पास पढ़ने वाला यह क्षेत्र नेपाल का हिस्सा है और भारत में नेपाल से वार्ता किए बिना इस क्षेत्र में सड़क निर्माण का कार्य किया है। नेपाल द्वारा आधिकारिक रूप से नेपाल का नवीन मानचित्र जारी किया गया जो उत्तराखंड के कालापानी (Kalapani), लिपियांधुरा (Limpiyadhura) और लिपुलेख(Lipulekh) को अपने संप्रभु क्षेत्र का हिस्सा मानता है। नेपाल ने इस संबंध में वर्ष 1816 में हुई सुगौली संधि (Sugauli treaty) का जिक्र किया है। नेपाल के विदेश मंत्रालय के अनुसार सुगौली संधि वर्ष 1816 के तहत काली (महाकाली) नदी के पूर्व के सभी क्षेत्र जिनमें लिंपियाधूरा, कालापानी और लिपुलेख शामिल है, नेपाल का अभिन्न अंग है। एंग्लो नेपाली युद्ध

के पश्चात वर्षा 1816 में नेपाल और ब्रिटिश भारत द्वारा सुगौली की संधि हस्ताक्षरित की गई थी। उल्लेखनीय है कि सुगौली संधि में महाकाली नदी का नेपाल की पश्चिमी सीमा के रूप में परिभाषित किया गया है। नेपाल सरकार के अनुसार बीते वर्ष जम्मू कश्मीर के विभाजन के पश्चात भारत सरकार द्वारा प्रकाशित नए मानचित्र में भिन्नता से स्पष्ट था कि भारत द्वारा इस मानचित्रों में छेड़खानी की गई है।

क्या बिगड़ते रिश्ते में भारत की भूमिका है?

नवंबर 2019 को भारत में एक नवीन मानचित्र प्रकाशित किया था जो जम्मू कश्मीर और लद्दाख को केंद्र शासित प्रदेश के रूप में दर्शाता है इसी मानचित्र में काला पानी को भी भारतीय क्षेत्र के रूप में दर्शाया गया है। इस मानचित्र ने भारत नेपाल के बीच पुराने विवादों में नई जान डाल दी। भारतीय फिल्मों में नेपाली महिलाओं को लेकर की गई आपत्तिजनक टिप्पणी से भी नेपाल ने नाराजगी व्यक्त की। नेपाल वर्ष 2017 में चीन की **वन बेल्ट वन रोड** परियोजना में शामिल हुआ, परंतु भारत नेपाल पर इस परियोजना में शामिल न होने का दबाव डाल रहा था भारत द्वारा इस प्रकार दबाव डालना नेपाल को रास नहीं आया और इस घटना ने भारत की **बिग ब्रदर** वाली छवि को स्थापित किया। दोनों देशों के संबंधों में कड़वाहट तब आए जब सितंबर 2015 में नेपाली संविधान अस्तित्व में आया। लेकिन, भारत द्वारा नेपाल संविधान का उस रुप में स्वागत नहीं किया जिस रूप में नेपाल को आशा थी। इसी तरह नवंबर 2015 में जेनेवा में भारतीय प्रतिनिधित्व द्वारा नेपाल में राजनीतिक फेरबदल को प्रभावित करने के लिए मानवाधिकार परिषद के मंच का कठोरता पूर्वक उपयोग किया गया, जबकि इससे पहले तक नेपाल के आंतरिक मुद्दों को लेकर भारत द्वारा कभी भी खुलकर कोई टिप्पणी नहीं की गई थी। भारत का रूख मधेशियों को नेपाल में नागरिकता का अधिकार दिलाना था। इनमें लाखों मधेशियों ने वर्ष 2015 में नागरिकता को लेकर व्यापक आंदोलन चलाया था। नेपाल सरकार का ऐसा आरोप है कि मधेशियों के समर्थन में भारत सरकार ने उस समय नेपाल की आर्थिक घेराबंदी की थी।

नेपाल पर चीन का प्रभाव

गौरतलब है कि चीन का प्रभाव दक्षिण एशिया में लगातार बढ़ रहा है। नेपाल, श्रीलंका पाकिस्तान या बांग्लादेश हर जगह चीन की मौजूदगी बड़ी है। यह सभी देश चीन की बेल्ट

एंड रोड इनीशिएटिव परियोजना में शामिल हो गए हैं। लेकिन भारत इस परियोजना के पक्ष में नहीं है। नेपाल में चीन के बढ़ते दखल के बाद पिछले कुछ समय से भारत नेपाल के बीच संबंधों में पहले जैसी गर्मजोशी देखने को नहीं मिल रही। चीन ने इसका पूरा पूरा लाभ उठाते हुए नेपाल में अपनी स्थिति को और मजबूत किया है। नेपाल के कई स्कूलों में चीनी भाषा मंदारिन को पढ़ाया भी अनिवार्य कर दिया गया है। नेपाल में इस भाषा को पढ़ाने वाले शिक्षकों के वेतन का खर्चा भी चीन की सरकार द्वारा उठाने के लिए तैयार है। चीन नेपाल में ऐसा बुनियादी ढांचा तैयार करने की परियोजना पर काम कर रहा है जिन पर भारी खर्च आता है।

भारत के लिए नेपाल का महत्व

नेपाल की अहमियत इस वजह से भी ज्यादा है कि पीएम मोदी के सत्ता में आने के बाद **पहले पड़ोस की नीति** के मद्देनजर नेपाल उनके शुरुआती विदेशी दौरों में से एक था। जबकि इससे पहले आखरी बार वर्ष 1997 में नेपाल के साथ भारत की कोई विपक्षी वार्ता हुई थी। मौजूदा सरकार ने नेपाल सरकार के साथ कई महत्वपूर्ण समझौते भी किए हैं। कृषि रेलवे संबंध और अंतर्देशीय जल मार्ग विकास सहित कई विपक्षी समझौतों पर सहमति बनी है। इनमें बिहार के रक्सौल और काठमांडू के बीच सामरिक रेलवे लिंक का निर्माण किया जाएगा, ताकि लोगों के बीच संपर्क तथा बड़े पैमाने पर माल के आवागमन को सुविधाजनक बनाया जा सके। इसके अलावा मोतिहारी से नेपाल के अमेलखगंज तक दोनों देशों के बीच ऑयल पाइप लाइन बिछाने पर भी हाल ही में सहमति बनी है। नेपाल का दक्षिणी क्षेत्र भारत की उत्तरी सीमा से सटा है। भारत और नेपाल के बीच रोटी बेटी का रिश्ता माना जाता है। बिहार और पूर्वी उत्तर प्रदेश के साथ नेपाल के **मधेशी समुदाय** का सांस्कृतिक एवं नृजातीय संबंध रहा है। दोनों देशों की सीमाओं से यातायात पर कभी कोई विशेष प्रतिबंध नहीं रहा। सामाजिक और आर्थिक विनिमय बिना किसी गतिरोध के चलता रहता है। भारत–नेपाल की सीमा खुली हुई है और आवागमन के लिए किसी पासपोर्ट या वीजा की जरूरत नहीं पड़ती है। यह उदाहरण कई मायनों में भारत–नेपाल की नजदीकी को दर्शाता है।

आगे की राह

नेपाल सरकार ने स्पष्ट किया है कि वह दो देशों के मध्य घनिष्ठ और मैत्रीपूर्ण संबंधों की भावना को ध्यान में रखते हुए ऐतिहासिक संधि, दस्तावेजों, तथ्यों और नक्शों के आधार पर सीमा के मुद्दों का कूटनीतिक हल प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है। भारत को भी अपनी विदेश नीति की समीक्षा करने की जरूरत है। भारत को नेपाल के प्रति अपनी नीति दूरदर्शी बनानी होगी। जिस तरह से नेपाल में चीन का प्रभाव बढ़ रहा है उससे भारत को अपने पड़ोसी देशों में आर्थिक शक्ति का प्रदर्शन करने से पहले राजनीतिक लाभ हानि पर विचार करना होगा। भारत और चीन के साथ नेपाल एक आजाद सौदागर की तरह व्यवहार कर रहा है और चीनी निवेश के सामने भारत की चमक फीकी पड़ रही है। लिहाजा भारत को कूटनीतिक सूझबूझ का परिचय देना होगा।